मई: 2025

वर्ष : 8 अंक : 8

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

"लहर को सही समय पर पकड़ने में किस्मत साथ दे सकती है, पर उसके साथ आगे बढ़ पाना आप पर है।" जिमोह ओबिएगेल

संस्थान का मासिक समाचार, मई 2025 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

मई का महीना की महत्वपूर्ण बातों से जुड़ा हुआ होता है। इसकी शुरुआत (1 मई) अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस से होती है जो दुनिया भर में श्रमिकों के अधिकारों और योगदान को मान्यता देने के लिए मनाया जाता है। साथ ही, इस माह वेसाक (बुद्ध पूर्णिमा) आता है। यह एक प्रमुख बौद्ध पर्व और इसे बौद्ध धर्म के जनक गौतम बुद्ध के जन्म, ज्ञान प्राप्ति और महापरिनिर्वाण की स्मृति में मनाया जाता है। इसके अलावा, इस महीने नोबेल पुरस्कार विजेता, गुरूदेव रबिन्द्रनाथ टैगोर जयंती अंतरराष्ट्रीय स्तर पर "मदर्स डे" भी मनाया जाता है।

इस अंक में अप्रैल माह में आयोजित और घटित संस्थान गतिविधियों के बारे में बताया गया है। जैसे जनजातीय मछुआरों के कौशल विकास के लिए 'जलाशयों से मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए पिंजरे और घेरे में मछली पालन पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, सूदरबन के कुलतोली में घर के बैकयार्ड स्थित पोखर में मछली पालन हेतु मॉडल गाँव को विकसित करने संबंधी एक आरंभिक कार्यशाला तथा अन्तर्स्थलीय खुले जल में पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य निगरानी और मत्स्य प्रबंधन पर 21-दिवसीय शीतकालीन स्कूल का आयोजन किया गया।

शुभकामनाओं सहित

(बसन्त कुमार दास)

अंतर्स्थलीय खुले जल निकायों में पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य निगरानी और मत्स्य प्रबंधन पर 21-दिवसीय शीतकालीन विद्यालय

20 फरवरी से 12 मार्च, 2025 तक आईसीएआर-सेंट्रल इनलैंड फिशरीज रिसर्च इंस्टीट्यूट (आईसीएआर–सिफरी), बैरकपुर में आयोजित "भूमि अंतर्स्थलीय मुक्त जल निकायों में पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य निगरानी और मत्स्य प्रबंधन" पर 21-दिवसीय शीतकालीन विद्यालय एक व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया। जिसमें विभिन्न शैक्षणिक और अनुसंधान पृष्ठभूमि के विशेषज्ञों और प्रतिभागियों ने एक साथ भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन 20 फरवरी, 2025 को संस्थान के निदेशक और पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. बि. के. दास द्वारा स्वागत भाषण के साथ हुआ।

इस शीतकालीन विद्यालय को अंतर्स्थलीय मुक्त जल संसाधनों और स्थायी मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित किया गया था, जिनमें एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन, जलीय पारिस्थितिक तंत्र से जुड़ी समस्याएं, उभरते प्रदूषक, नदियों

के स्वास्थ्य की पारिस्थितिक निगरानी, और मुक्त जल स्वास्थ्य निगरानी में प्रौद्योगिकीय हस्तक्षेप शामिल थे। इसके अलावा, जीआईएस आधारित संसाधन मानचित्रण और निगरानी, नदियों में पर्यावरणीय प्रवाह का मूल्यांकन, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव एवं शमन उपाय, आईओटी आधारित निगरानी प्रणाली, और पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन विधियाँ जैसे विषय भी शामिल थे।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, विश्वविद्यालय संकाय सदस्यों, कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs) के विषय विशेषज्ञों और परियोजना वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इसमें तीन शैक्षणिक-सह-भ्रमण यात्राएं भी कराई गईं—पूर्व कोलकाता वेटलैंड्स, कल्याणी में एक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट, और कल्याणी विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय पारिस्थितिक अभियांत्रिकी केंद्र की यात्रा।

इस कार्यक्रम में कई प्रमुख विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान एवं प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिनमें अमेरिका की एरिज़ोना विश्वविद्यालय से प्रो. (डॉ.) अरुण धर का व्याख्यान शामिल था: "पालन योग्य शंखधारी मछलियों में उभरती बीमारियाँ और उनके विशेष निदान से निगरानी"। आईआईटी रुड़की के प्रो. (डॉ.) शरद जैन ने जल संरक्षण रणनीतियों पर, जबकि पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के डॉ. कृष्णेंदु मंडल ने जलविद्युत परियोजनाओं में पर्यावरणीय स्वीकृति से संबंधित नीति और चुनौतियों पर व्याख्यान दिया।

12 मार्च, 2025 को समापन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. बी. मीनाकुमारी, पूर्व उप-महानिदेशक

(मत्स्य), आईसीएआर मुख्य अतिथि रहीं। कार्यक्रम में डॉ. ए.के. सिंह (पूर्व निदेशक, आईसीएआर–डीसीएफआर), डॉ. बी. पी. मोहंती (पूर्व सहायक महानिदेशक, अंतर्स्थलीय मत्स्य), तथा प्रो. (डॉ.) एस. दत्ता (आईआईटी गुवाहाटी) जैसी विभूतियाँ उपस्थित रहीं।

समारोह की शुरुआत डॉ. बि. के. दास द्वारा स्वागत भाषण से हुई, जिन्होंने कार्यक्रम की सफलता और उपस्थिति हेतु सभी गणमान्य अतिथियों का आभार प्रकट किया। डॉ. ए. के. साहू, वरिष्ठ वैज्ञानिक और शीतकालीन विद्यालय के समन्वयक ने कार्यक्रम का सार प्रस्तुत किया और प्रमुख उपलब्धियों को साझा किया। इस अवसर पर शीतकालीन विद्यालय की मैनुअल पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. बी. मीनाकुमारी ने अपने प्रेरणादायक संबोधन में कहा कि पारिस्थितिकी तंत्र की निगरानी सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के सहयोग से बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। अन्य अतिथियों ने भी पारिस्थितिकी तंत्र की निगरानी और जल संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन पर अपने विचार साझा किए।

प्रतिभागियों ने भी अपना फीडबैक साझा किया, जो अत्यंत सकारात्मक रहा। उन्होंने विषयों की व्यापकता, विशेषज्ञ वक्ताओं के ज्ञान, और कार्यक्रम की उत्तम संगठनात्मक व्यवस्था की प्रशंसा की। कार्यक्रम का समापन डॉ. डी. के. मीणा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

शीतकालीन विद्यालय से प्रमुख सिफारिशें:

- **सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन हेतु पारिस्थितिकी तंत्र की निगरानी पर जोर।**
- **पारंपरिक एवं आधुनिक तकनीकों के समेकन से मुक्त जल संसाधनों की प्रभावी निगरानी और प्रबंधन।**
- **स्थायी मत्स्य प्रबंधन के लिए निर्णय समर्थन प्रणाली का विकास।**
- **हितधारकों एवं पेशेवरों के लिए क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रम।**
- **पारिस्थितिकी तंत्र निगरानी एवं मत्स्य प्रबंधन से जुड़े जटिल मुद्दों के समाधान हेतु बहु-विषयक अनुसंधान और सहयोग को बढ़ावा देना।**

इस प्रकार, अंतर्देशीय खुले जल में पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य निगरानी और मत्स्य प्रबंधन पर 21 दिवसीय शीतकालीन विद्यालय एक शानदार सफलता थी, जिसने विशेषज्ञों और प्रतिभागियों को अंतर्देशीय खुले जल संसाधनों के सतत प्रबंधन पर ज्ञान, अनुभव और विचारों को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान किया। कार्यक्रम ने पारिस्थितिकी तंत्र स्वास्थ्य निगरानी और अंतर्देशीय खुले जल संसाधनों की प्रभावी निगरानी और प्रबंधन के लिए पारंपरिक और आधुनिक प्रौद्योगिकियों के एकीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया। विदाई समारोह कार्यक्रम का एक उपयुक्त समापन था, जिसमें गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों ने समान रूप से जोर दिया ।

महाराष्ट्र के पालघर जिले के आदिवासी मछुआरों के लिए 'जलाशय से मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए पिंजरे और पेन संस्कृति' पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

आईसीएआर-सिफरी ने महाराष्ट्र सरकार के ठाणे और पालघर जिले के मत्स्य विभाग के सहयोग से वडोदरा में अपने अनुसंधान केंद्र के माध्यम से 25-27 मार्च 2025 के दौरान महाराष्ट्र के पालघर जिले के आदिवासी मछुआरों के लिए 'जलाशय से मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए पिंजरे और पेन संस्कृति' पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। पालघर जिले के अट्ठाईस आदिवासी मछुआरों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। पालघर जिले के सहायक मत्स्य आयुक्त श्री डी.एच. पाटिल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और मछुआरों को मत्स्य विभाग, महाराष्ट्र सरकार द्वारा टीएसपी के तहत मछुआरों के लिए उपलब्ध विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी। आईसीएआर-सिफरी, वडोदरा के वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रभारी अधिकारी डॉ. एस. पी. कांबले ने प्रतिभागियों को बीज और खाने योग्य मछली उत्पादन के लिए पिंजरे और पेन संस्कृति के विभिन्न पहलुओं में प्रशिक्षित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में सैद्धांतिक व्याख्यान पिंजरे की संस्कृति और पेन संस्कृति, अंतर्देशीय खुले पानी में संलग्न संस्कृतियों में आहार प्रबंधन और पर्यावरण और संलग्न संस्कृति में मछली स्वास्थ्य प्रबंधन शामिल थे। वडोदरा अनुसंधान स्टेशन के तकनीकी अधिकारी श्री जे. के. सोलंकी ने अंतर्देशीय खुले पानी में पिंजरे और पेन संस्कृति में पर्यावरणीय मापदंडों की भूमिका और उनके महत्व पर व्यावहारिक सत्र लिया। श्री जे. के. सोलंकी, तकनीकी अधिकारी, डॉ. संदीप जाधव, सहायक मत्स्य विकास अधिकारी और श्रीमती प्रियंका म्हापसेकर, सहायक मत्स्य विकास अधिकारी की सक्रिय भागीदारी ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

मेघालय की नदियों में हिल्सा प्रवास की खोज और आवास मानचित्रण शुरू किया

हिल्सा तेनुओलोसा इलीशा, पश्चिम बंगाल की राज्य मछली और बांग्लादेश की राष्ट्रीय मछली, भारत, बांग्लादेश और म्यांमार में लाखों लोगों की आजीविका का समर्थन करने वाले अपने वाणिज्यिक, सांस्कृतिक और पोषण संबंधी महत्व के कारण क्षेत्रीय महत्व की रही है। यह प्रजाति एनाड्रोमस माइग्रेशन करती है, यानी प्रजनन और स्पॉनिंग के लिए समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र से मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र में जाती है। भारत में, इस प्रजाति को हुगली, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र, गोदावरी, कावेरी, महानदी, कृष्णा और चिल्का लैगून में अच्छी तरह से दर्ज किया गया है। हालाँकि, एंथ्रोपोसीन की श्रृंखला के कारण, हिल्सा की उपलब्धता सीमित रही है। भारत बांग्लादेश के साथ अपनी नदी कनेक्टिविटी को सबसे अधिक साझा करता है, खासकर उत्तर पूर्वी राज्यों में।

मेघालय राज्य चार उत्तर पूर्वी राज्यों में से एक है जो बांग्लादेश के साथ भूमि और नदी दोनों सीमाओं को साझा करता है। इस राज्य में हिल्सा की उपलब्धता को समझने के लिए, आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सिफरी), बैरकपुर ने मेघालय पावर जेनरेशन कॉरपोरेशन लिमिटेड (एमपीजीसीएल) से वित्तीय सहायता के साथ क्षेत्र अन्वेषण शुरू किया और भविष्य की हिल्सा प्रबंधन योजनाओं के विकास के लिए सीमा पार की नदियों में हिल्सा प्रवास को चित्रित किया। अध्ययन एक वर्ष की अवधि के लिए किया जाएगा, जिसमें सभी मौसम और प्रजातियों के लिए आवास उपयुक्तता शामिल होगी। जांच हमें हिल्सा प्रवास के लिए पानी की आवश्यकता का पता लगाने और हिल्सा प्रजनन और स्पॉनिंग क्षेत्रों के संरक्षण के लिए उपयुक्त आवास विकसित करने में सहायता करेगी। इस जांच का नेतृत्व डॉ. बि.के.दास, ए.के.साहू, डी.के.मीणा और एससीएस दास कर रहे हैं, जो प्रवास व्यवहार, आवास मानचित्रण, आवास उपयुक्तता और दीर्घकालिक हिल्सा मत्स्य प्रबंधन योजनाओं के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

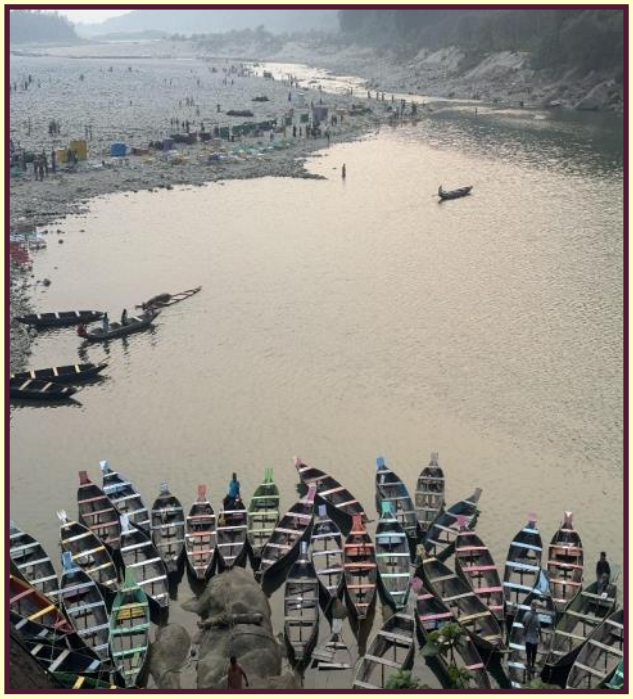

बिहार के मुजफ्फरपुर के मछली पालकों के लिए आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा कौशल प्रशिक्षण

भारत के बिहार के तिरहुत क्षेत्र का एक जिला मुजफ्फरपुर, उत्तर बिहार के अग्रणी मछली उत्पादक जिले के रूप में तेजी से उभर रहा है। इस जिले ने न केवल मछली उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल की है, बल्कि पड़ोसी जिलों को मछली निर्यात करना भी शुरू कर दिया है। आजीविका के स्रोत के रूप में मछली पालन में बढ़ती रुचि को देखते हुए, प्रतिभागियों को अंतर्देशीय मछली उत्पादन में आवश्यक कौशल और विशेषज्ञता से लैस करने के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा 2 से 8 अप्रैल, 2025 तक बैरकपुर में "अंतर्देशीय मत्स्य प्रबंधन" पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में एक मत्स्य विकास अधिकारी सहित 31 सक्रिय मछुआरों ने भाग लिया। इसका उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने किया, जिन्होंने स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने के लिए अंतर्देशीय मत्स्य प्रबंधन में वैज्ञानिक ज्ञान और व्यापक कौशल हासिल करने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रतिभागियों को उत्पादकता और उत्पादन बढ़ाने के लिए नवीन तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रशिक्षण में सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों तरह के सीखने के अनुभव प्रदान किए गए, साथ ही ऑन-फील्ड प्रदर्शन भी किए गए। सैद्धांतिक सत्रों में तालाब निर्माण और प्रबंधन, मिट्टी और पानी की गुणवत्ता का रखरखाव, नर्सरी और पालन तालाब संचालन, मिश्रित मछली पालन, प्राकृतिक मछली खाद्य जीव, बिहार में जलीय कृषि के लिए उम्मीदवार प्रजातियाँ, प्रेरित प्रजनन और हैचरी प्रबंधन, मछली स्वास्थ्य देखभाल, फ़ीड निर्माण और फीडिंग प्रोटोकॉल, सजावटी मछली पालन, जलवायु परिवर्तन का प्रभाव, शून्य-बजट प्राकृतिक खेती, संलग्नक संस्कृति, आर्द्रभूमि के सामाजिक-आर्थिक और शासन पहलू और मछली पालन के वित्तीय पहलू जैसे विविध विषयों को शामिल किया गया।

व्यावहारिक सत्रों और फील्ड विजिट में हलिसहर मछली फार्म, ईस्ट कोलकाता वेटलैंड्स (ईकेडब्ल्यू) और सजावटी मछली बाजारों की यात्राएँ शामिल थीं। प्रतिभागियों ने स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके जल गुणवत्ता परीक्षण और मछली फ़ीड तैयार करने जैसे क्षेत्रों में व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त किया। उन्हें सजावटी हैचरी और फ़ीड मिल जैसी सुविधाओं से परिचित कराया गया।

8 अप्रैल, 2025 को कार्यक्रम का समापन हुआ, जिसमें प्रतिभागियों को आईसीएआर-सीआईएफआरआई के प्रभारी निदेशक डॉ. एस. सामंत से पूर्णता प्रमाण पत्र प्राप्त हुए। उन्होंने प्रशिक्षण में उनके समर्पण और सफल भागीदारी की प्रशंसा की। इस प्रशिक्षण का समन्वय डॉ. गणेश चंद्रा, वैज्ञानिक (एसएस) और डॉ. एम. शाया देवी, वैज्ञानिक ने किया, जिसमें श्री सुजीत चौधरी (सीटीओ), श्री मनबेंद्र रॉय (टीओ), डॉ. अविषेक साहा (एसटीए) और श्री पंकज कुमार (तकनीशियन) का तकनीकी सहयोग रहा।

त्रिपुरा मत्स्य विभाग के सहयोग से जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम का आयोजन

आईसीएआर–सेंट्रल इनलैंड फिशरीज रिसर्च इंस्टीट्यूट (आईसीएआर–सिफरी) ने त्रिपुरा सरकार के मत्स्य विभाग (DoF) के सहयोग से 17 अप्रैल 2025 को त्रिपुरा मत्स्य विकास बोर्ड, कॉलेजटिल्ला, अगरतला, पश्चिम त्रिपुरा के कार्यालय परिसर में एक जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य त्रिपुरा के विभिन्न विद्यालयों में एक्वेरियम में सजावटी मछली पालन के प्रति जागरूकता फैलाना था। कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय श्री बिश्वजीत शिल, सभाधिपति, पश्चिम त्रिपुरा जिला परिषद, अगरतला द्वारा किया गया।

यह कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास, ए.आर.एस., निदेशक, आईसीएआर–सिफरी, बैरकपुर; श्री एस. दास, आईएएस, निदेशक, मत्स्य विभाग, त्रिपुरा सरकार तथा डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, आईसीएआर–सिफरी, गुवाहाटी के समग्र दिशा-निर्देशन में आयोजित किया गया। उद्घाटन भाषण में डॉ. बि. के. दास ने बताया कि आईसीएआर–सिफरी अपने एनईएच कार्यक्रम के तहत त्रिपुरा के 50 विद्यालयों को स्टैंड सहित 50 एक्वेरियम एवं अन्य सामग्री (सजावटी मछलियाँ, चारा, एरेटर, एवं सहायक उपकरण) प्रदान कर रहा है, ताकि त्रिपुरा में सजावटी मछली पालन को लोकप्रिय बनाया जा सके। उन्होंने विद्यालय प्रबंधन और अधिकारियों से वैज्ञानिक ढंग से एक्वेरियम प्रबंधन अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री एस. दास ने त्रिपुरा के विभिन्न विद्यालयों में सजावटी मछली पालन को लोकप्रिय बनाने की इस अनूठी पहल के लिए आईसीएआर–सिफरी को धन्यवाद दिया। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि त्रिपुरा में मत्स्य क्षेत्र के विकास के लिए विभाग की ओर से आईसीएआर–सिफरी को पूर्ण सहयोग प्रदान किया जाएगा।

अपने आरंभिक संबोधन में डॉ. एस. के. माझी ने आईसीएआर–सिफरी, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी की चल रही अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी दी, विशेष रूप से उत्तर-पूर्वी भारत में सजावटी मत्स्य पालन पर केंद्रित प्रयासों का उल्लेख किया। डॉ. एस. भट्टाचार्य, परियोजना वैज्ञानिक, आईसीएआर–सिफरी, बैरकपुर ने सजावटी मछली पालन और एक्वेरियम प्रबंधन के तकनीकी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की।

कार्यक्रम में श्री एन. जी. नोआतिया, उप निदेशक, मत्स्य विभाग, पश्चिम त्रिपुरा तथा श्री ए. देबबर्मा, संयुक्त निदेशक, मत्स्य विभाग, त्रिपुरा सरकार ने भी विद्यालयों में एक्वेरियम पालन के महत्व को रेखांकित किया।

इस अवसर पर एक पहल के रूप में, पश्चिम त्रिपुरा एवं सिपाहीजला जिलों के 14 विद्यालयों को स्टैंड सहित 14 एक्वेरियम एवं अन्य सामग्री (सजावटी मछलियाँ, चारा, एरेटर, सहायक उपकरण) वितरित किए गए। शेष 36 एक्वेरियम अन्य 6 जिलों के विद्यालयों में त्रिपुरा मत्स्य विभाग द्वारा आईसीएआर–सिफरी के सहयोग से वितरित किए जाएंगे।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों और शिक्षकों में सजावटी मछली पालन तथा एक्वेरियम में रुचि विकसित करना है। तकनीकी सत्र में एक्वेरियम की स्थापना का प्रदर्शन किया गया, जिसके बाद डॉ. बि. के. दास एवं अन्य विशेषज्ञों द्वारा विद्यालय शिक्षकों, मछली पालकों और मत्स्य अधिकारियों के साथ संवाद सत्र आयोजित किया गया।

दिनभर चले इस कार्यक्रम का समन्वय श्री एस. देबबर्मा, मत्स्य विकास अधिकारी; श्री एच. सरकार, मत्स्य अधीक्षक; एवं श्री आर. देबबर्मा, कार्यकारी अधिकारी, मत्स्य विभाग, त्रिपुरा सरकार द्वारा किया गया। कुल 100 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया, जिनमें विद्यालय शिक्षक, मछली पालक, मत्स्य अधिकारी और अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल थे। कार्यक्रम का समापन डॉ. एस. सी. एस. दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईसीएआर–सिफरी, गुवाहाटी द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

सागर द्वीप में नीली क्रांति: अनुसूचित जाति उपयोजना के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने का प्रयास

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री), बैरकपुर, द्वारा आजीविका विकास और पोषण सुरक्षा के लिए सुंदरबन के ग्रामीण समुदाय के विकास का समर्थन करने के लिए विभिन्न पहलों को सक्रिय रूप से लागू किया जा रहा है। इन प्रयासों में घर के पीछे के तालाब में मछली पालन, नहर मत्स्य पालन का विकास, सजावटी मछली पालन को बढ़ावा देना, कार्प हैचरी इकाइयों की स्थापना और कई प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, सिफ़री ने इस क्षेत्र में चक्रवात और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रतिकूल प्रभावों से निपटने में समुदायों की मदद करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2018 से संस्थान ने महिलाओं सहित 3500 से अधिक ग्रामीण अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों को लाभान्वित किया है।

पश्चिम बंगाल सरकार के सुंदरबन मामलों के माननीय मंत्री श्री बंकिम चंद्र हाजरा ने आईसीएआर-सिफ़री , बैरकपुर के निदेशक डॉ बि के दास की

उपस्थिति में आईसीएआर-सिफ़री के जनजातीय उपयोजना कार्यक्रम के तहत एफआरपी कार्प हैचरी का उद्घाटन किया। एफआरपी हैचरी मछली बीज उत्पादन, आजीविका विकास और आर्थिक सशक्तीकरण के लिए सुंदरबन के आत्मनिर्भरता को प्राप्त करने के साथ-साथ सागर द्वीप में बाहरी मछली बीज खरीद पर निर्भरता को कम करने में सहायता करेगी। अनुसूचित जाति की महिलाओं की आजीविका को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, आईसीएआर-सिफ़री ने अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत सागर द्वीप में घर के पीछे के तालाब में मछली पालन के लिए 20 अप्रैल, 2025 को इनपुट वितरण और एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। रुद्रनगर, सागर द्वीप में आयोजित इस इनपुट वितरण कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल सरकार के सुंदरबन मामलों के माननीय मंत्री की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित किया गया। आईसीएआर-सिफ़री के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने वैज्ञानिक तरीके से मछली पालन के महत्व पर प्रकाश डाला और महिला लाभार्थियों से आय और पोषण दोनों को बढ़ाने के लिए संस्थान द्वारा प्रदान किए गए इनपुट का सर्वोत्तम उपयोग करने का आग्रह किया।

इस कार्यक्रम के तहत सागर सामुदायिक विकास खंड की विभिन्न ग्राम पंचायतों की 350 अनुसूचित जाति की महिलाओं को लाभ हुआ। प्रत्येक लाभार्थी को 6 किलोग्राम भारतीय मेजर कार्प (आईएमसी) अंगुलिमीन और 80 किलोग्राम मछली का चारा मिला। इनमें से प्रत्येक महिला के घर के पास छोटे तालाब हैं, जिनका आकार 0.02 से 0.04 हेक्टेयर तक है। यह पहल उनके तालाबों से उनकी दैनिक घरेलू जिम्मेदारियों में हस्तक्षेप किए बिना आय का एक अतिरिक्त स्रोत बनाने और पोषण सुरक्षा प्रदान करने के लिए डिज़ाइन की गई है। यह पहल एक

पश्चिम बंगाल की आर्द्रभूमियों में मछली पालन मेला और संवेदीकरण कार्यक्रम की एक श्रृंखला आयोजित : आईसीएआर-सिफ़री की एक पहल

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री), बैरकपुर, कोलकाता ने 16 और 17 अप्रैल 2025 को पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना, सिंद्रानी, कुंडीपुर, बीजपुर और कुमली आर्द्रभूमियों में "मछली पालन मेला और संवेदीकरण कार्यक्रम" का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) और एससीएसपी के तहत किया गया था। कार्यक्रम का संचालन आईसीएआर-सिफ़री, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में किया गया।

अपनी अत्यधिक उत्पादक पारिस्थितिकी प्रणालियों के लिए जानी जाने वाली बाढ़ग्रस्त मैदानी आर्द्रभूमि भारत के सबसे आशाजनक अन्तर्स्थलीय खुले जल क्षेत्रों में से हैं। हालांकि, अवैज्ञानिक प्रबंधन प्रथाओं और मानव-प्रेरित गतिविधियों जैसे कि जूट की सड़न और घरेलू सीवेज निर्वहन के कारण उनकी मछली उत्पादन में काफी कमी आई है। इस

समस्या के समाधान के लिए, आईसीएआर–सिफ़री एक स्थायी समाधान के रूप में कल्चर आधारित मत्स्य पालन (CBF) को बढ़ावा दे रहा है। इसमें उच्च गुणवत्ता वाले, बड़े आकार के मछली के बीज को स्टॉक करना शामिल है, जिसे पेन कल्चर तकनीकों का उपयोग करके सीटू में उगाया जाता है। आईसीएआर–सिफ़री ने स्थायी मत्स्य पालन विकास के लिए पेन कल्चर और CBF के प्रदर्शन के लिए एक मॉडल साइट के रूप में आर्द्रभूमियों को चुना है। पहल के हिस्से के रूप में आईसीएआर–सिफ़री ने आर्द्रभूमि में मत्स्य पालन के विकास का समर्थन करने के लिए सिफ़री एचडीपीई पेन, मछली के बीज, मछली का चारा और एक आउटबोर्ड इंजन वाली मछली पकड़ने की नाव सहित कई मत्स्य पालन इनपुट वितरित किए गए।

बीजपुर, कुंदीपुर में 150 किलोग्राम मछली के बीज और कुमली और सिंदरानी (लेबियो रोहिता, लेबियो कैटला और लेबियो बाटा) में 75 किलोग्राम मछली के बीज का स्टॉक करके एक पेन कल्चर प्रदर्शन किया गया। चार महीने की अवधि में, पेन ने बीजपुर में 310 किलोग्राम, कुंडीपुर में 424 किलोग्राम, सिंद्रानी में 275 किलोग्राम और 180 किलोग्राम मछली की पैदावार पाई गई, जिसे बाद में सीबीएफ प्रणाली के लिए आर्द्रभूमि में स्टॉक किया गया। पूरे कार्यक्रम में प्राथमिक मछुआरों की सहकारी समिति के 200 से अधिक सदस्यों की भागीदारी देखी गई। प्रदर्शनों और बातचीत के माध्यम से वैज्ञानिक, तकनीकी कर्मचारी और परियोजना कर्मी , मछुआरों के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे। इन सत्रों से महत्वपूर्ण ज्ञान और तकनीकी कौशल उन्हें सिखाया गया, जिससे मछुआरों को पेन कल्चर और सीबीएफ विधियों को प्रभावी ढंग से अपनाने में मदद मिली।

स्थानीय मछुआरों ने भी अपनी अंतर्दृष्टि साझा की और इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे आईसीएआर–सिफ़री के हस्तक्षेपों ने उनकी आजीविका को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. लियानथुआमलुइया, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा किया गया था, जिसमें श्री कौशिक मोंडल, वरिष्ठ तकनीकी सहायक और डॉ. बंदना दास घोष, परियोजना वैज्ञानिक ने सक्रिय रूप से समर्थन किया।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने सुंदरबन में सतत आजीविका के लिए आदर्श ग्राम परियोजना शुरू की

स्थायी ग्रामीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई) ने कुलटोली मिलन तीर्थ सोसाइटी और भारतीय स्टेट बैंक, कोलकाता सर्कल के सहयोग से सीएसआर पहल के तहत एक परिवर्तनकारी परियोजना का उद्घाटन किया, जिसका उद्देश्य पिछवाड़े तालाब संस्कृति के माध्यम से भारतीय सुंदरबन में 100 परिवारों का उत्थान करना है।

इस परियोजना के लिए आरंभिक कार्यशाला 26 अप्रैल, 2025 को हलदर पारा, उत्तर मोकाम्बेरिया ग्राम पंचायत, बसंती ब्लॉक, दक्षिण 24 परगना में आयोजित की गई थी। उद्घाटन समारोह कुलटोली मिलन तीर्थ सोसाइटी, कुलटोली में हुआ, जो इस पहल की औपचारिक शुरुआत को चिह्नित करता है जिसका उद्देश्य गांव को 'आदर्श गांव' के रूप में विकसित करना है।

कार्यक्रम में उद्घाटन समारोह, लाभार्थियों के साथ बातचीत, परियोजना स्थल का उद्घाटन, मछली चारा का वितरण और

चयनित लाभार्थियों के तालाबों में मछली के बीज छोड़ने जैसी कई प्रमुख गतिविधियाँ शामिल थीं। प्रारंभिक वितरण के हिस्से के रूप में, लाभार्थियों को 10 किलोग्राम मछली बीज और 120 किलोग्राम चारा सौंपा गया।

1947 में स्थापित एक प्रमुख शोध संस्थान, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, पूरे भारत में अंतर्देशीय खुले जल मत्स्य पालन विकास में सबसे आगे रहा है। अनुसंधान, विस्तार और प्रशिक्षण पर मजबूत ध्यान देने के साथ, संस्थान देश भर में मछुआरों, विशेष रूप से महिला मछुआरों को लक्षित करके आजीविका संवर्धन कार्यक्रमों में भी सक्रिय रूप से शामिल है।

कार्यक्रम में उद्घाटन समारोह, लाभार्थियों के साथ बातचीत, परियोजना स्थल का उद्घाटन, मछली चारा का वितरण और चयनित लाभार्थियों के तालाबों में मछली बीज छोड़ना जैसी कई प्रमुख गतिविधियाँ शामिल थीं। प्रारंभिक वितरण के हिस्से के रूप में, लाभार्थियों को 10 किलोग्राम मछली बीज और 120 किलोग्राम चारा सौंपा गया। इन कदमों से क्षेत्र में आर्थिक विकास और खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देने, एक आत्मनिर्भर मछली पालन मॉडल की नींव रखने की उम्मीद है।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विवेकानंद सिंह, डीजीएम,

एसबीआई, दक्षिण 24 परगना, डॉ. बि.के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई और भागीदार संगठनों के प्रतिनिधियों सहित कई विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे। उनकी उपस्थिति और प्रोत्साहन भरे शब्दों ने स्थानीय समुदाय को प्रेरित किया और ग्रामीण सशक्तीकरण के लिए इस तरह की पहल के महत्व को रेखांकित किया।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के उप महाप्रबंधक (डीजीएम) ने मॉडल विलेज प्रोजेक्ट को वास्तविकता बनाने में आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बि.के. दास की युगांतरकारी पहल और शोध प्रयासों की सराहना की। डॉ. बि.के. दास ने सभा को संबोधित करते हुए इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक परिवार को अपने सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए मछली पालन से होने वाली बचत पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि यदि यह पहल एक मॉडल गांव बनाने में सफल होती है, तो यह कई और परिवारों को एक स्थायी भविष्य की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले के आदिवासी मछुआरों के लिए रंगीन मछली पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

आदिवासी मछुआरा समुदाय के लिए आय के अवसर पैदा करने में सजावटी मछली पालन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आईसीएआर-सीआईएफआरआई सजावटी मछली पालन के माध्यम से वैकल्पिक आय सृजन प्रदान करके वैकल्पिक आजीविका विकल्प पैदा करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए लगातार काम कर रहा है। इसे देखते हुए, आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 23 से 25 अप्रैल, 2025 के दौरान आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर में अनुसूचित जनजाति घटक (एसटीसी) के तहत पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले के आदिवासी लाभार्थियों के लिए "आय सृजन के लिए सजावटी मछली पालन" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन सजावटी मछली पालन के विभिन्न पहलुओं में आदिवासी मछुआरों को उचित ज्ञान प्रदान करने और उनकी क्षमता का निर्माण करने के उद्देश्य से किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में बीरभूम जिले के शांतिनिकेतन के आसपास के 14 विभिन्न गांवों से कुल 24 आदिवासी पुरुष प्रतिभागियों ने भाग लिया। आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया और प्रशिक्षुओं से बातचीत की तथा उन्हें सजावटी मछली पालन के लिए प्रेरित

किया। उन्होंने प्रशिक्षुओं से आय सृजन के लिए छोटे घरेलू व्यवसाय मॉडल के रूप में सजावटी मछली पालन करने का भी आग्रह किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में सजावटी मछली पालन के विभिन्न पहलुओं पर जोर दिया गया, जिसमें सजावटी मछली का मूल परिचय, मछली की देखभाल, सजावटी मछली का प्रजनन, सैद्धांतिक और व्यावहारिक कक्षाओं के संयोजन के माध्यम से मछलीघर निर्माण, साथ ही क्षेत्र प्रदर्शन शामिल हैं। प्रशिक्षुओं को संस्थान की सुविधाओं जैसे कि रीसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम

(आरएएस), सजावटी हैचरी इकाई और मछलीघर से भी परिचित कराया गया। व्यावहारिक सत्रों में मुख्य रूप से सजावटी

मछलियों के प्रजनन सेट अप, मछलीघर निर्माण, एक्वास्केपिंग आदि जैसे विषयों को शामिल किया गया। प्रशिक्षुओं को यथार्थवादी प्रदर्शन प्रदान करने के लिए हावड़ा जिले के मकरदाहा गांव और दास नगर सजावटी बाजार में क्षेत्रीय यात्रा का आयोजन किया गया। तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरण के साथ हुआ। प्रशिक्षुओं ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति अपनी उच्च संतुष्टि व्यक्त की। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन श्री एम.एच. रामटेके और डॉ. अपर्णा रॉय ने किया, जिसमें श्री सुजीत चौधरी, श्री मनबेंद्र रॉय, डॉ. अविषेक साहा, श्री कौशिक मंडल और डॉ. श्रेया भट्टाचार्य ने आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि.के. दास के मार्गदर्शन और नेतृत्व में सहयोग किया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- मार्च 2025 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली पकड़ने का अनुमान 13.858 टन पता चला था। पिछले वर्ष इसी महीने की तुलना में मछली पकड़ने में लगभग 27.126% की वृद्धि देखी गयी है। कुल मछली पकड़ में यह वृद्धि प्रयागराज में महाकुंभ-2025 के आयोजन के बाद सीपीयूई में वृद्धि के कारण हो सकती है।
- मध्य प्रदेश के गांधीसागर जलाशय (1996-2024) में विश्लेषण के दौरान मछली उत्पादन और फिंगरलिंग स्टॉकिंग दोनों के बीच कोई सुसंगत रैखिक संबंध नहीं दिखता है इससे पता चलता है कि अकेले स्टॉकिंग से उत्पादन नहीं बढ़ता है।
- एक खुले हुए कोयला खदान स्थित गड्ढे (ओसीपी) से तिलापिया और पंगास के गिल, यकृत, गुर्दे, और मांसपेशियों में भारी धातुओं (क्रोमियम, मैग्नीज़, आयरन, कोबाल्ट, निकल, कॉपर, आर्सेनिक, कैडमियम, लीड) का विश्लेषण किया गया और परिणाम से पता चलता है कि इन ओसीपी की सभी मछलियों के भागों में इन धातु का स्तर मानव उपभोग के लिए सुरक्षित सीमा के भीतर था।
- जैव विविधता के समग्र संरक्षण की दिशा में एनएमसीजी के 'राष्ट्रीय पशुपालन मिशन-III' के अंतर्गत विभिन्न स्थलों जैसे

बिहार के मुंगेर और बेगूसराय में लगभग 2.20 लाख देशी गंगा भारतीय मुख्य कार्प के बच्चो को गंगा नदी में छोडा गया।

- फरक्का के ऊपरी भाग में कुल 18,397 हिल्सा वयस्क मछलियों का पालन किया गया जिनमें से 57 नमूनों को प्रवासी पथ को समझने के लिए टैग किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- आईसीएआर-सिफरी ने 24-25 मार्च, 2025 के दौरान बालागढ़, हुगली, पश्चिम बंगाल की 24 महिला मछुआरों के लिए "उद्यमिता विकास के लिए अलंकारी मछली पालन" पर एआईएनपी प्रायोजित व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया।
- आईसीएआर-सिफरी ने बिहार के खगड़िया जिले के 30 मछुआरों के लिए 21 मार्च से 27 मार्च, 2025 के दौरान "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर डीओएफ, बिहार प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।
- आईसीएआर-सिफरी ने बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के 30 मछुआरों के लिए 02 अप्रैल से 08 अप्रैल, 2025 के दौरान "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर डीओएफ, बिहार प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।
- 8 अप्रैल, 2025 को बिहार के मुंगेर जिले में एक जागरूकता-सह-पशुपालन कार्यक्रम आयोजित किया गया और कार्यक्रम में कुल 100 मत्स्य हितधारकों ने भाग लिया।
- 9 अप्रैल, 2025 को बिहार के बेगूसराय जिले में एक जागरूकता-सह-पशुपालन कार्यक्रम आयोजित किया गया और कार्यक्रम में कुल 150 मछुआरों ने भाग लिया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 01 अप्रैल, 2025 को थूथुकुडी मत्स्य महाविद्यालय और अनुसंधान संस्थान थूथुकुडी के 55 छात्रों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जिसमें छात्रों को संस्थान और अन्तर्स्थलीय खुले जल में मत्स्य पालन से संबंधित विभिन्न आधुनिक और वैज्ञानिक प्रणालियों के बारे में प्रारंभिक उन्मुखीकरण प्रदान किया गया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 03 अप्रैल, 2025 को सीओएफ त्रिपुरा के बी.एफ.एस.सी. के 20 छात्रों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जिसमें छात्रों को संस्थान और अन्तर्स्थलीय खुले पानी में मत्स्य पालन से संबंधित विभिन्न आधुनिक और वैज्ञानिक प्रथाओं के बारे में प्रारंभिक उन्मुखीकरण प्रदान किया गया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 55 छात्रों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया। थूथुकुडी मत्स्य महाविद्यालय एवं अनुसंधान संस्थान थूथुकुडी के छात्रों का 04 अप्रैल, 2025 को एक एक्सपोजर विजिट आयोजित किया गया जिसमें छात्रों को संस्थान और खुले जल में मत्स्य पालन से संबंधित विभिन्न आधुनिक और वैज्ञानिक प्रथाओं के बारे में प्रारंभिक उन्मुखीकरण प्रदान किया गया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 8 अप्रैल, 2025 को विद्यासागर महिला महाविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल के 27 प्राणीशास्त्र छात्रों (6वें सेमेस्टर) के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया जिसमें छात्रों को संस्थान और संस्थान की प्रयोगशालाओं में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन से संबंधित विभिन्न आधुनिक और वैज्ञानिक तकनीकों के बारे में उन्मुखीकरण किया गया।
- आईसीएआर-सिफरी ने 15 अप्रैल, 2025 को झारखंड के गुमला स्थित मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय के 12 बी.एफ.एस.सी. छात्रों (चौथे वर्ष) के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया जिसमें छात्रों को संस्थान और खुले जल में मत्स्य पालन से संबंधित विभिन्न आधुनिक और वैज्ञानिक प्रथाओं के बारे में उन्मुखीकरण किया गया।
- आईसीएआर-सिफरी ने गंगा नदी के विभिन्न क्षेत्रों में डॉल्फिन, हिल्सा और महाशीर संरक्षण पर 11 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जिसमें स्थानीय लोगों और मछुआरों सहित 1,155 प्रतिभागियों को जागरूक किया गया।

अन्य

- इस वर्ष आईसीएआर-सिफरी ने अनुसंधान के माध्यम से विकसित एक नई प्रौद्योगिकी के लिए पेटेंट दायर किया ।
- इस आईसीएआर-सिफरी ने निजी एमएसएमई क्षेत्र में 05 व्यावसायीकृत प्रौद्योगिकियों का विकास किया ।
- इस वर्ष आईसीएआर-सिफरी ने उद्योग हितधारकों के साथ साझेदारी के लिए 03 लाइसेंसिंग समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

The primary aim of the conference was to deliberate on the opportunity to unlock

Professor Tripathy urged all college principals to ensure their institutions Minimum investment

encouraged a positive approach toward the expected qualitative been revised by

College Development Council Dr. Santosh Kumar Agrawal, information. BSE Fa

vote of thanks was delivered by Professor Pankaj Kumar Padhi.

Fish Harvest Melaat Wetlands: A New Sustainable Ground in Inland Fisheries

KOLKATA(KCN):Conducted under the National Mission for Clean Ganga (NMCG) and Scheduled Caste Sub Plan (SCSP), ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI), Barrackpore, organized a successful venture of a two-day Fish Harvest Mela and Sensitization Programme recently. The event took place across four significant wetlands - Sindrani, Kundipur, Bijpur, and Kumli, in North 24 Parganas, West Bengal.

Floodplain wetlands, known for their ecological richness and productivity, are key inland water bodies with immense potential for fisheries. However, their productivity has been hampered by unscientific management and

based fisheries (CBF) as a sustainable alternative. Utilizing pen culture technology and stocking high-quality, large-sized fish seed, the institute aims to enhance fish production while

wetlands, and 75 kilograms each in Kumli and Sindrani. After a four-month culture period, the pen culture initiative yielded promising results, with 424 kilograms of fish harvested in Kundipur.

distributed essential fisheries inputs CIFRI HDPE quality fish seed, fish feed, and outboard engine boat to further foster local fishery development.

and promoting knowledge exchange. Fishermen attending the programme expressed appreciation for ICAR-CIFRI's effective action noting improvement

expand and grow.

CAR-CIFRI Empowers Tripura Schools with Ornamental Fish Units

olkata,(KCN): The CAR-Central Inland isheries Research stitute (CIFRI), in llaboration with the ent of Fisheries, ernment of Tripura, gnized an awareness g-input distribution ogramme at the ripura Fisheries evelopment Board, ollegetilla, Agartala, est Tripura. The event med to promote namental fish keeping nong school students ross Tripura under the orth Eastern Hill JEH) programme. r. B. K. Das, Director, CAR-CIFRI, addressed the gathering and highlighted the importance of ornamental fish keeping as a hobby and potential livelihood opportunity. He announced the distribution of 50 complete aquarium sets — including stands, ornamental fishes, feed, aerators, and accessories — to 50 schools across the state.As part of the initial phase, 14 aquariums along with essential inputs were distributed among 14 selected schools from West Tripura and Sepahijala districts. The initiative is expected to create awareness and interest among young students regarding aquarium fish keeping and its benefits.

The programme aligns with the broader vision of the Indian Council of Agricultural Research (ICAR) and the Ministry of Fisheries, Animal Husbandry and Dairying, Government of India, under the guidance of Shri Shivraj Singh Chouhan, Union Minister of Agriculture & Farmers' Welfare, and Shri Rajiv Ranjan Singh alias Lalan Singh, Minister of Fisheries, Animal Husbandry and Dairying.

Model Village Project for Sustainable Sundarbans: A CSR Initiative by ICAR-CIFRI

Kolkata,(KCN):In a bid to foster inclusive growth and rural prosperity, innovative livelihood projects are being rolled out across India's vulnerable regions. Taking a bold step towards strengthening rural livelihoods and promoting sustainable aquaculture, the ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI) has launched a Model Village Project in the Sundarbans. In partnership with Kultoli Milan Tirtha Society and the State Bank of India (SBI), Kolkata Circle, the initiative aims to empower 100 families by introducing backyard pond fish farming under a Corporate Social Responsibility (CSR) initiative.

The inception workshop and official launch ceremony took place at Haldar Para, Uttar Mokamberia Gram Panchayat, in B Block, South 24 P The event inaugurated at the Ku Milan Tirtha Societ premises, setting the stage for a transformative journey towards economic empowerment and food security for the participating families.Established in 1947, ICAR-CIFRI has been a pioneer in inland open water fisheries research and development. The institute not only focuses on scientific research and

ing but also engages ly in livelihood enhancement initiatives for fishers, especially women, across India.

Key highlights of the programme included an inauguration ceremony, interactions with the beneficiaries, site visits, and the distribution of critical fish farming inputs. Beneficiaries received 10 kg of fish seed and 120 kg of fish feed to kickstart pond-based aquaculture activities. The release of fish seed into backyard ponds marked the first step towards building a self-reliant and sustainable fish farming model.The event was graced by several dignitaries, including Mr. Vivekananda Singh, Deputy General Manager, SBI, South 24 Parganas, and Dr. B.K. Das, Director, ICAR-CIFRI, along with other representatives from the partner organizations. Addressing the gathering, Mr. Singh praised Dr. Das and his team for their dedication and research efforts in conceptualizing and implementing the Model Village Project.

Dr. B.K. Das emphasized the importance of financial literacy and saving habits among the beneficiaries to ensure the long-term sustainability of the initiative. "If we can successfully create one model village, it will serve as a blueprint for supporting many more families towards a sustainable and prosperous future," Dr. Das said.This initiative represents a significant collaboration between research institutions, community organizations, and financial institutions, highlighting a shared commitment towards inclusive rural development and environmental stewardship. The project is expected to serve as a replicable model for rural transformation in similar ecological and socio-economic settings across the country.

New Delhi(A Ansari): An impo meeting of All Pasmanda Mu Mahaz was held to Delhi office under leadership of Nati Working President Shariq Adeeb An Senior office bearer executive member the organization atte it.

The meeting began paying tribute to civilians martyred in Pahalgam terror atta Jammu and Kash The members pro observed two minut silence and prayed the peace of the sou the martyrs. M strongly condemned cowardly attack. The meeting discu the social status Pasmanda Muslims the effects of the Am Amendment Bill. speakers raised issues of irregularit Waqf properties violation of the righ the Pasm

main evening. also dance alpuri slot of led the and students full event Dilissi haran, hinaya event ss and autiful the atabdi highly the

ICAR-CIFRI River Ranc

KOLKATA(KCN):ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (CIFRI), Barrackpore had organized theNational Ranching Mission III as the part of the NamamiGangeproject atMunger, Bihar. Guided by Dr.Basanta Kumar Das, Director of ICAR-CIFRI, a total of 1,10,000 fish fingerlings of Indian major carps including 65,000 Rohu, 33,000 Catla, and 12,000 Mrigal fish were released into the river. The program was attended by the Deputy Development Commissioner of Munger, the District Fisheries Officer, senior scientists, technical officers, and members of the research team from ICAR-CIFRI. Local fishermen from nearby communities also actively participated in the event. Highlighting the importance of river ranching, Dr.Basanta Kumar Das emphasized that this initiative not only

हिन्दुस्तान

सोझी घाट पर रैंचिंग कार्यक्रम हुआ

नमामि गंगे

मुंगेर, निज प्रतिनिधि। मंगलवार को शहर के सोझी घाट पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के केन्द्रीय अन्तर स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान बैरकपुर द्वारा नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय नदी संवर्धन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर, डॉ. बसंत कुमार दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई के मार्गदर्शन में भारतीय प्रमुख कार्प की एक लाख दस हजार मछली बीजों को गंगा नदी में छोड़ा गया।इनमें 65,हजारेरहू, 33 हजार कतला और 12 हजार मृगला मछलियां शामिल हैं। कार्यक्रम में डीडीसी अनीश कुमार सिंह, जिला मत्स्य पदाधिकारी,मनीषरस्तोगी और वरिष्ठ वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी और अनुसंधान दल के सदस्य भी उपस्थित रहे। इस दौरान, आसपास के मछुआरों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

नदी रैंचिंग से मछलियों की जैव विविधता में वृद्धि होती है और यह नदी के प्राकृतिक संसाधनों की

सोझी घाट पर गंगा नदी में मछलियों का जीरा डालते डीडीसी अनीश कुमार व अन्य।

नदी रैंचिंग कार्यक्रमों का विभिन्न क्षेत्रों में दिखा रहा प्रभाव

नदी रैंचिंग से गंगा नदी में मछली संसाधनों में वृद्धि हुई, जिससे पटना में मछली की लैंडिंग में प्रतिवर्ष से बढ़कर 14.8 प्रतिशत हो गई। इस कार्यक्रम ने मछुआरों और समुदायों की संसाधनों के बेहतर उपयोग और संरक्षण के लिए जागरूक किया। इसके परिणामस्वरूप मछली पकड़ने की गतिविधियां और स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत हुई। इसके साथ ही गंगा नदी के संरक्षण के लिए 49 जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें 4325 लोगों को प्रशिक्षण, महिलाओं के संरक्षण, छोटी मछलियों को न पकड़ने और गंगा नदी की प्रदूषण से बचाने के बारे में बताया गया। इन कार्यक्रमों के माध्यम से, स्थानीय लोगों में नदी संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

कि नदी रैंचिंग से मछलियों की जैव विविधता में वृद्धि होती है और यह नदी के प्राकृतिक संसाधनों की

द्वारा इस तरह के आयोजन गंगा नदी के पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने के उद्देश्य से किए जा रहे हैं।

সুন্দরবনের মহিলা মৎস্যজীবীদের স্বনির্ভরতার নতুন দিশার সূচনা

বিশেষ সংবাদদাতা, বাসন্তী : সুন্দরবন অঞ্চলে ধান চাষের পাশাপাশি পুকুরে মিষ্টি জলের মাছ চাষ জীবিকার অন্যতম উৎস হিসাবে চলে আসছে। কর্মসংস্থানের বিকল্প ক্ষেত্র না থাকায় ছেলেদের এক বিশাল অংশ অন্য রাজ্য ও বিদেশে শ্রমিকের কাজ করতে পাড়ি দেয়। অথচ প্রযুক্তি ও প্রশিক্ষণ দিয়ে এইসব এলাকায় মাছ চাষ করতে পারলে আর্থসামাজিক পরিকাঠামোর কিছুটা উন্নতি হওয়া সম্ভব ছিল। বছরকয়েক আগে কেন্দ্রীয় অন্তস্থলীয় মৎস্য গবেষণা সংস্থার অধিকর্তা আর মৎস্যবিজ্ঞানীরা সুন্দরবনের আগ্রহী স্বেচ্ছাসেবী সংস্থা কুলতলী মিলনাদীর্ঘ সোসাইটির কর্মধার লোকমান মোল্লার সঙ্গে যোগাযোগ করে মাছ চাষের মাধ্যমে এলাকার মহিলাদের স্বনির্ভর করা সম্ভব বলে জানান। এরপর শুরু হয় কুলতলী মিলনাদীর্ঘ সোসাইটি ও কেন্দ্রীয় অন্তস্থলীয় মৎস্য গবেষণা সংস্থার যৌথ উদ্যোগে সুন্দরবনের গ্রামিক জনগোষ্ঠীর তপশিলী জাতি, উপজাতি ও পিছিয়ে পড়া মহিলা মৎস্যজীবীদের স্বনির্ভর করার কাজ। শনিবার সুন্দরবনের গ্রামীণ বাসন্তী ব্লকের উত্তর মোকামবেড়িয়া গ্রামপঞ্চায়েতের অধীন হালদারপাড়া গ্রামকে উন্নত প্রযুক্তিতে মাছ চাষের আদর্শ গ্রাম বা মডেল ভিলেজের সূচনা হয়। ভারতীয় স্টেট ব্যাঙ্কের কর্পোরেট সোশ্যাল রেসপন্সিবিলিটি তহবিলের সহায়তায় কেন্দ্রীয় অন্তস্থলীয় মৎস্য গবেষণা সংস্থার প্রযুক্তি আর প্রশিক্ষণ ও কুলতলী মিলনাদীর্ঘ সোসাইটি পরিচালন ব্যবস্থাপনায় এদিনের অনুষ্ঠানে উদ্বোধন করেন সিনহাল ডিভেলপ্ড ড. বসন্তকুমার দাস। ছিলেন স্টেট ব্যাঙ্কের ডিজিএম বিবেকানন্দ সিং, মিলনাদীর্ঘ সোসাইটির প্রতিষ্ঠাতা সভাপতি লোকমান মোল্লা, বিজ্ঞানী ড. অপর্ণা রায়, স্টেট ব্যাঙ্কের এজিএম সুব্রত হাজরা, জোনেল্ট সাহেবিক্ষেত্র কট্টরার্থ ও আরো অনেকে। ড. বসন্ত কুমার দাস বলেন, "গত কয়েক বছরে সুন্দরবন অঞ্চলে মহিলা মৎস্যচাষিদের সঙ্গে নিয়মিত নীবিড় আর্থিক ক্ষমতা নিয়ে কাজ করে আসছে। আমাদের সংস্থা মূলত গবেষণা নির্ভর। কিন্তু তা সত্ত্বেও সুন্দরবনের মানুষের জীবন জীবিকার উন্নয়নের স্বার্থে প্রযুক্তি প্রশিক্ষণের পাশাপাশি কিছুটা ঋণপুট দিয়ে সহায়তা করার সাধ্যমত আমরা চেষ্টা করছি। হালদারপাড়া গ্রামের ১০০ জন মৎস্যজীবী পরিবারকে মাছ চাষের মাধ্যমে স্বনির্ভর করার লক্ষ্য সামনে রেখে মডেল ভিলেজ বানানোর উদ্যোগ নেওয়া হয়েছে। ভারতীয় স্টেট ব্যাঙ্কের পক্ষ থেকে সিএসআর তহবিলের মাধ্যমে আর্থিক সাহায্য পাওয়া গেছে। আগামী ১ বছর ধরে আমাদের ১জন কর্মী হালদারপাড়ার মাছচাষিদের সঙ্গে প্রতিনিয়ত যোগাযোগ রেখে পরামর্শ দেবেন। এছাড়া আমাদের পার্টনার অর্গানাইজেশন কুলতলী মিলনাদীর্ঘ সোসাইটি দেখভাল করবে। আমি বিশ্বাস করি মৎস্যচাষিরা আমাদের প্রযুক্তি প্রশিক্ষণ নিয়ে মাছ চাষ করলে আর্থিকভাবে স্বনির্ভর হবে।' স্টেট ব্যাঙ্কের ডিজিএম বিবেকানন্দ সিং বলেন, 'ভারতীয় স্টেট ব্যাঙ্ক, ব্যাঙ্কিং পরিষেবার পাশাপাশি দেশজুড়ে পিছিয়ে পড়া জনগোষ্ঠীর জীবিকা, শিক্ষা, স্বাস্থ্য ও সংস্কৃতির ক্ষেত্রে সিএসআর তহবিল থেকে সাহায্য করে আসছে। সব স্তরের নাগরিকদের ব্যাঙ্কিং পরিষেবায় অন্তর্ভুক্ত হতে হবে। নারীকে আর্থিকভাবে স্বনির্ভর হওয়া জরুরি হবে।' কুলতলী মিলন দীর্ঘ সোসাইটির কর্মধার লোকমান মোল্লা বলেন, "অনীনতার ৭৮ বছর পেরিয়ে গেলেও এখানের মানুষদের অস্তিত্ব সংকট। অনেক এখানে জায়গা। তবু এখানে মানুষকে থাকতে হয়। কারণ কোথাও এঁদের মাথা গোঁজার জায়গা নেই। কয়েক বছর ধরে আমাদের সংস্থা ও কেন্দ্রীয় অন্তস্থলীয় মৎস্য গবেষণা সংস্থা যৌথ উদ্যোগে মহিলা মৎস্যচাষিদের স্বনির্ভর করার কাজ চালিয়ে আসছে। আজ পরীক্ষামূলকভাবে হালদারপাড়া গ্রামকে মডেল ভিলেজ হিসেবে গড়ে তোলার উদ্যোগ নেওয়া হয়েছে। আশা করি আগামী দিনে হালদারপাড়া গ্রাম সুন্দরবনবাসীদের পথ দেখাবে।' সিনহাল ডিভেলপ্ড ড. অপর্ণা রায় বলেন, "সুন্দরবন এলাকায় আমাদের সংস্থা বেশ কয়েক বছর ধরে মহিলাদের জীবিকার টেকসই উন্নয়নের জন্য চেষ্টা চালিয়ে আসছে। আজকের মডেল ভিলেজ উদ্বোধনের মাধ্যমে যাতে আগামী দিনে সুন্দরবনের প্রতিটি গ্রাম মডেল ভিলেজ হিসেবে গড়ে ওঠে সেই বার্তা দিতে চাই। সুন্দরবনের মানুষের আর্থিক সাফল্য এতে অনেকাংশে লাভ হবে।' স্টেট ব্যাঙ্কের এজিএম সুব্রত হাজরা বলেন, 'সুন্দরবনের বিশাল অংশের বাসিন্দা দরিদ্রসীমার নিচে রয়েছেন। তাই সিএসআর প্রকল্পের মাধ্যমে হালদারপাড়া গ্রামকে মডেল ভিলেজ করার উদ্যোগে সামিল হয়েছি।' এদিন ১০০টি দরিদ্র পরিবারকে ১০ কেজি মাছ ও ১২০ কেজি মাছের খাদ্য দেওয়া হয়। মহিলা মৎস্যচাষি পুতুল হালদার ও শিউলি হালদার জানান, 'এই সর্বপ্রথম আমরা এ ধরনের সাহায্য পেলাম। আগামী দিনে এই মাছ চাষ করার পর যা বিক্রি করে স্বনির্ভর হব আর অন্যদের উৎসাহিত করব।'

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है